ASSIGNMENT REFERENCE MATERIAL (2019-20)

BHDF-101

हिंदी में आधार पाठ्यक्रम

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए :
   (क) लकीर का फकीर होना
   (ख) आँखों में गड़ना
   (ग) आटे के साथ घुन पिसना
   (घ) दांत खट्टे करना
   (ङ) ईद का चाँद होना

उत्तर- **(क) लकीर का फकीर होना–** निर्देशा अनुसार ही कार्य करना – बेहतर सुझाव के बावजूद कुछ लोग सिर्फ लकीर के फकीर ही बने रहते हैं।

(ख) आँखों में गड़ना– (किसी वस्तु को पाने की उत्कट लालसा)- उसकी कलम मेरी आँखों में गड़ गयी है।

(ग) आटे के साथ घुन पिसना– (अपराधी के साथ निर्दोष को भी सजा मिलना)- राघव तो जुआरियों के पास केवल खड़ा हुआ था, पुलिस उसे भी पकड़कर ले गई। इसे ही कहते हैं- आटे के साथ घुन पिसना।

(घ) दांत खट्टे करना– बुरी तरह हराना – उम्र और अनुभव में राजू बड़ा है पर फिर भी मैच में मैंने उसके दाँत खट्टे कर दिए।

(ङ) ईद का चाँद होना– ईद का चाँद (बहुत कम दिखाई देना) अरे! आजकल तो तुम ईद का चाँद हो गए हो।

2. निम्नलिखित शब्दों के मेल से बनने वाले शब्द बनाइए :
   (क) सद् + गति
   (ख) विद्या + आलय
   (ग) पुरुष + उत्तम
   (घ) सत् + चित् + आनंद
   (ङ) शब्द + आडंबर

उत्तर- **(क)** सद्गति
(ख) विद्यालय
(ग) पुरुषोत्तम
(घ) सच्चितान्द
(ङ) शब्दाडंबर

3. निम्नलिखित शब्दों के दो–दो समानार्थी शब्द बताइए :
   (क) अभिमान
   (ख) आजादी
   (ग) तालाब
   (घ) निवेदन
   (ङ) युद्ध

उत्तर- **(क)** अहंकार, गर्व
(ख) स्वाधीनता, स्वतंत्रता

(ग) जलाशय, सरोवर

(घ) विनय, प्रार्थना

(ङ) मुकाबला, संघर्ष

4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए :
   (क) विनम्र
   (ख) उजाला
   (ग) निर्धन
   (घ) सुरक्षित
   (ङ) आकाश

उत्तर- **(क)** उद्दण्ड

(ख) अंधेरा

(ग) धनी

(घ) असुरक्षित

(ङ) पाताल

5. निम्नलिखित शब्दों के संधि-विच्छेद कीजिए :
   (क) कालांतर
   (ख) निर्गुण
   (ग) मनोबल
   (घ) साग्रह
   (ङ) वयोवृद्ध

उत्तर- **(क)** काल + अंतर

(ख) निः + गुण

(ग) मनः + बल

(घ) स + आग्रह

(ङ) वयः + वृद्ध

6 निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग बताइए :
   (क) परलोक
   (ख) बदसूरत
   (ग) अधखिला
   (घ) सुवास
   (ङ) आजीवन

उत्तर- **(क)** पर

(ख) बद

(ग) अध

(घ) सु

(ङ) आ

7. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाइए :
   (क) मानव
   (ख) काला

(ग) रूप
(घ) देहात
(ङ) कर्म

उत्तर- **(क)** मानवता
(ख) कालापन
(ग) रूपक
(घ) देहाती
(ङ) कार्मिक

8 निम्नलिखित प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250–300 शब्दों में लिखिए :

(क) 'जीने की कला' का विश्लेषण अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर- वैसे निबंध में शीर्षक कोई विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता। कभी-कभी तो उसे अपने विचारों के प्रतिपादन का बहाना मात्र बना लिया जाता है। लेकिन विषयनिष्ठ निबंधों के लिए शीर्षक के विषय में निबंधकार को पर्याप्त सावधानी बरतनी पड़ती है। आप ऊपर-ऊपर से देखें तो यही लगेगा कि शीर्षक से इस निबंध की अंतर्वस्तु तथा प्रतिपाद्य का कोई विशेष संबंध नहीं है। लेकिन इस निबंध का गहन अध्ययन करने के बाद आप समझ गए होंगे कि महादेवी जी ने 'जीने की कला' शीर्षक को प्रतिपाद्य के साथ किस कौशल से जोड़ा है। इस शीर्षक के संबंध में जो दूसरी महत्त्वपूर्ण बात है, वह यह है कि इस निबंध को इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाली 'चाँद' पत्रिका की सम्पादकीय टिप्पणी के रूप में 1934 में लिखा गया था। ऐसी कई टिप्पणियों को एकत्र कर शृंखला की कड़ियाँ' शीर्षक से 1942 में उसे पुस्तकाकार रूप दिया गया। इस संग्रह के विभिन्न शीर्षकों को आप देखें तो पत्रकारिता और उसके युगीन दबाव का अनुभव आप स्वयं कर सकेंगे। 'हमारी शृंखला की कड़ियाँ', 'नारीत्व का अभिशाप', 'युद्ध और नारी', 'घर और बाहर', 'हिंदू स्त्री का पत्नीत्व : जीवन का व्यवसाय', 'स्त्री के अर्थ-स्वातंय्य का प्रश्न', 'समाज और व्यक्ति' तथा 'जीने की कला।' 1930-40 के मध्य स्वाधीनता आंदोलन के साथ ही नारी-मुक्ति आंदोलन का भी बोलबाला था। 'हिंदू स्त्री का पत्नीत्व', 'नारीत्व का अभिशाप' आदि विषयों पर महादेवी जी लिख चुकी थीं। इन रचनाओं में भी उन्होंने नारी के जीवन पर अनेक कोणों से प्रकाश डाला था। इस निबंधात्मक टिप्पणी को 'जीने की कला' शीर्षक देकर पत्रिका के पाठकों को आकृष्ट करने का प्रयास भी इसमें निहित है, जो पत्रकारिता की एक अनिवार्य आवश्यकता है। लेकिन कला को नारी-जीवन की शैली से जिस प्रकार महादेवी ने जोड़ा है, उससे शीर्षक प्रतिपाद्य के साथ सार्थक ढंग से जुड़ जाता है।

किसी एक निश्चित उद्देश्य से प्रेरित होकर ही लेखक कोई रचना करता है। वह उद्देश्य ही रचना का प्रतिपाद्य होता है। इस निबंध में भी महादेवी जी का एक निश्चित उद्देश्य रहा है, जिसे इसका प्रतिपाद्य कहा जा सकता है।

नारी जीवन के अभिशाप के लिए सबसे पहले नारी को ही जिम्मेदार साबित करते हुए लेखिका ने पूरी सहानुभूति के साथ उसे सचेत और जागरूक बनाने का प्रयास किया है। सतीत्व, पातिव्रत्य, त्याग, बलिदान, सहनशीलता, करुणा, स्नेह, ममता के ऊँचे आदर्शों के खूँटे से बंधकर जिस प्रकार उसने अपने-आपको असहाय बना दिया है, उसे छोड़कर वह इन आदर्शों के मानवीय महत्त्व और लक्ष्य को समझे। उपर्युक्त आदर्श कर्तव्य के बंधन मात्र न होकर अधिकार के भी साधन भी हैं। उसे इन सिद्धांतों या आदर्शों को अपने पैरों की बेड़ियाँ न बनाकर इन्हें अपने जीवन के विकास और उत्थान के लिए उपयोग में लाना चाहिए। इस तथ्य का प्रतिपादन निबंध में अनेक संदर्भों और उदाहरणों द्वारा किया गया है।

(ख) मैथिलीशरण गुप्त के भाव पक्ष की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- गुप्त जी के रचना काल में देश गुलाम था और अंग्रेजी शासन ने यहाँ पर अत्याचार फैला रखे थे। जनता स्वतंत्रता आन्दोलन में भागीदार थी। इसी संघर्ष का प्रभाव गुप्त जी पर भी दिखायी देता है। उनकी पहली पुस्तक ''रंग में भंग'' 1909 में निकली और 1912 में राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर उन्होंने ''भारत भारती'' जैसी अमर रचना की। यह रचना केवल

राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर नहीं लिखी गई थी, बल्कि इसके द्वारा गुप्त भी जनता में अपने देश की संस्कृति व परम्पराओं के प्रति गौरव की भावना जगाना चाहते थे। परन्तु वर्तमान दशा को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय भावना के साथ-साथ वर्तमान दुर्दशा से छुटकारा पाने के लिए भावनाओं को जागृत करने का प्रयास भी किया है। गुप्त जी धर्मपरायण व्यक्ति थे, परन्तु उनका दृष्टिकोण मानवतावादी था। इसीलिए उन्होंने सभी चरित्रों को मानवता के धरातल पर रखा था। पौराणिक कथाओं को ही आधार बनाया। मानवीय दृष्टि के आधार पर ही उर्मिला, यशोधरा आदि की व्यथा को प्रस्तुत करके नारी के आदर्श रूप को प्रस्तुत किया है और यह दिखाया है कि उनकी सहानुभूति नारी के प्रति अधिक था। गुप्त जी आदर्शवादी कवि थे। उन्होंने सामाजिक व पारिवारिक संबंधों के चित्रण में समानता व त्याग को सामने रखा है और साम्प्रदायिकता का विरोध किया है। वे आस्थावादी थे, परन्तु समाज में फैली बुराइयों के आलोचक भी थे। इन्हीं कारणों से वे राष्ट्र कवि के रूप में माने गये हैं। 'साकेत' की कथा भी राम की कथा है, परन्तु उन्होंने केवल उन प्रसंगों को लिया है, जिनमें केवल पारिवारिक सम्बन्धों का पक्ष उजागर होता है। राम-रावण के संघर्ष के अलावा पारिवारिक संबंध अधिक दिखाये गये हैं। इसमें नारी के सम्मान को विशेष रूप से दिखाया गया है। उर्मिला के त्याग को उन्होंने सीता के त्याग से ज्यादा दिखाया है, क्योंकि सीता तो राम के साथ रही, परन्तु उर्मिला ने अपने सभी सुखों को त्याग दिया था। 'साकेत' में उन्होंने लोकोन्मुख जीवन के चित्र प्रस्तुत किये हैं।

9. निम्नलिखित पद्यांशों का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए :

क) निरगुन कौन देस को बासी
मधुकर कहि समुझाइ सौंह दै बूझति साँच न हाँसी!!
को है जनक, कौन है जननी, कौन नारि को दासी।
कैसे बरन भेस है कैसो, केहि रस में अभिलासी।।
पावैगों पुनि कियो आपनो जो रे, कहैगो गाँसी।।
सुनत मौन ह्वै रह्यो ठग्यो सो सूर सबै मति नासी।।

उत्तर-

संदर्भ : यह महाकवि सूरदास द्वारा लिखा हुआ पद है। कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियाँ उनके विरह में व्याकुल रहती हैं। कृष्ण के मित्र उद्धव गोपियों को समझाने वृंदावन आते हैं और उन्हें निर्गुण-निराकार ईश्वर में विश्वास करने का उपदेश देते हैं। गोपियाँ उद्धव के मत का विरोध करती हैं और अपना पक्ष प्रस्तुत करती हैं। इसके लिए वे उद्धव को मधुकर (भ्रमर) कहकर संबोधित करती हैं।

व्याख्या : गोपियाँ उद्धव को संबोधित करते हुए कहते हैं, हे मधुकर अर्थात् उद्धव, तुम हमें समझाकर कहो कि निर्गुण किस देश का रहने वाला है। हम सौगंध देकर तुमसे सच-सच पूछ रही हैं, कोई हँसी नहीं कर रही हैं। हमें यह बताओ कि उस निर्गुण के माता-पिता कौन हैं, निर्गुण की पत्नी कौन हैं और उनकी दासी कौन हैं? उनका रंग कैसा है अर्थात् काले हैं या गोरे? उनकी वेशभूषा कैसी है अर्थात् वे किस तरह के वस्त्र धारण करते हैं और किस तरह के रस (आनंद) के वे इच्छुक हैं। गोपियाँ उद्धव को चेतावनी-सी देती हुई कहती हैं कि अगर तुमने कपटपूर्ण बात की अर्थात् तुम झूठ बोलोगे तो तुम्हें ही अपनी गलत करनी (कर्म) का फल भुगतना पड़ेगा। सूरदास जी कहते हैं कि उद्धव गोपियों की ये बातें सुनकर चुप हो गए और ठगे से रह गए, उनकी सारी बुद्धि नष्ट हो गई अर्थात् उनको कोई उत्तर नहीं सूझा।

विशेष :

1) सूरदास का यह पद अत्यंत महत्वपूर्ण है। निर्गुण मत के विरुद्ध गोपियों का पक्ष यहाँ प्रस्तुत किया गया है। लेकिन गोपियों के तर्कों में बौद्धिक चतुराई और दार्शनिक जटिलता नहीं है। इन पंक्तियों से गोपियों की विनोद-वृत्ति, भोलापन, चपलता और सहज बुद्धि का पता चलता है।

2) यह पद ब्रजभाषा में है। इसकी भाषा परिमार्जित, सहज और स्वाभाविक है। संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ देशज शब्दों (गाँसी, बूझति) का भी प्रयोग हुआ है। ठगा-सा रहना मुहावरा है। 'मधुकर' में श्लेष अलंकार है। श्लेष अलंकार वहाँ होता है जहाँ एक ही शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है। यहाँ मधुकर का एक अर्थ भँवरा है। दूसरा अर्थ उद्धव है क्योंकि उद्धव भी काले थे इसलिए गोपियाँ उद्धव को मधुकर कह कर संबोधित करती हैं।

3) इस पद में कबीर आदि के निर्गुण मत का खण्डन और अपने सगुण मत का समर्थन भी अत्यंत कौशल के साथ व्यक्त हुआ है।

ख) देखते देखा मुझे तो एक बार,
उस भवन की ओर देखा, छिन्न तार।
देख कर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से,
जो मार खा रोयी नहीं।
सजा सहज सितार
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुधर
ढुलक माथे से गिरे सीकर
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा –
'मैं तोड़ती पत्थर'।

उत्तर- संदर्भ - प्रस्तुत कविता निराला जी द्वारा रचित 'अनामिका' काव्य-संग्रह से ली गई है। इस कविता में कवि ने एक मजदूर औरत का चित्रण किया है। इस कविता में उन्होंने दिखाया है कि हमारे समाज में कितनी आर्थिक विषमता है कि एक तरु एक स्त्री धूप में कार्य कर रही है, जबकि दूसरी तरफ धूप स्वप्न में भी नहीं दिखाई देती।

व्याख्या - कवि कहता है कि मैं उस स्त्री की तरफ देख रहा था। उसी समय उसने भी एक बार मेरी तरफ देखा और फिर वह उन ऊँचे-ऊँचे महलों की तरफ देखने लगी। इस बीच में थोड़ी देर के लिए उसका कार्य रूक गया अर्थात् उसका मन मेरी ओर व भवनों की तरफ गया और उसका ध्यान अपने प्रिय कार्य से टूट गया। जब उसने यह देखा कि मेरे चारों तरफ कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है तो उसने मुझे ऐसी दृष्टि से देखा जैसे किसी को बहुत मार पड़ी हो, परन्तु वह रो भी न सका हो। कवि यहां पर गरीबी की उस पराकष्ठा पर पहुँच गया है, जहाँ मनुष्य आर्थिक अन्तर्द्वन्द्व को समझता तो है, परन्तु कुछ कर नहीं सकता। उसे यह पता है कि ये महल तेरे ही परिश्रम से बने हैं, परन्तु ये तेरे लिए नहीं हैं। निराल जी कहते हैं कि उस समय मैंने एक ऐसी आवाज को सुना, जिसे पहले कभी नहीं सुना था। थोड़ी देर के बाद उसके शरीर में कंपन-सी हुई और उसके माथे से पसीने की बूँदे गिरने लगीं और फिर वह अपने कार्य में लीन हो गयी अर्थात् पत्थर तोड़ने लगी। मुझे ऐसे लगा है जैसे वह कह रही हो कि मैं तो एक पत्थर तोड़ने वाली मजदूर औरत हूँ।

विशेष – निराला जी ने इस कविता में मजदूर औरत का चित्रण किया है। उन्होंने यह बताया है कि आर्थिक भेदभाव के कारण मनुष्य को वे कार्य भी करने पड़ते हैं, जो उसकी ताकत से बाहर होते हैं।

10. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 300 शब्दों में निबंध लिखिए :

(क) आम चुनाव

उत्तर– भारत एक लोकतांत्रिक देश है और एक लोकतांत्रिक देश में चुनाव का महत्व कभी भी उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। भारत में चुनाव देश की राजनीति और इसके समग्र विकास और विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ब्रिटिश शासन के दौरान, भारत ब्रिटिश रानी की संवैधानिक राजशाही के अधीन था और उसकी कोई स्व सरकार नहीं थी। हालाँकि स्वतंत्रता के बाद यह एक लोकतांत्रिक गणराज्य देश बन गया जिसमें एक सरकार थी जिसे अपने नागरिक के हाथों से चुना जाता है।

भारत में होने वाले प्रमुख प्रकार के चुनाव राष्ट्रपति, लोकसभा (आम चुनाव), राज्यसभा, राज्य विधानमंडल और स्थानीय निकाय होते हैं। जिन चुनावों में जनता सीधे तौर पर शामिल होती है, वे क्रमशः प्रधानमंत्री और राज्य के मुख्यमंत्री के चुनाव के लिए आम चुनाव (एमपी) और राज्य विधान सभा (एमएलए) होते हैं।

भारत का चुनाव आयोग भारत की सर्वोच्च स्वायत्त चुनावी एजेंसी है जो पूरी चुनाव प्रक्रिया के पर्यवेक्षण और प्रशासन में शामिल है। इसे राजनीतिक दलों को संवैधानिक दर्जा प्रदान करने, नामांकन प्रक्रिया पूरी करने, आदर्श आचार संहिता लागू करने, पूर्ण मतदान प्रक्रिया की देखभाल करने, परिणाम घोषणा के साथ-साथ स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव प्रक्रिया सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

भारत में चुनाव प्रक्रिया चुनाव की तारीखों की घोषणा के बाद शुरू होती है, इसके बाद उम्मीदवारों द्वारा नामांकन दाखिल किया जाता है, जिसे चुनाव आयोग द्वारा जांचा और स्वीकार किया जाता है। इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) के माध्यम से संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में चुनाव तिथि पर मतदान किया जाता है।

कोई भी भारतीय नागरिक जिसने पहचान के वैध प्रमाण के साथ 18 वर्ष की आयु प्राप्त की है, वह चुनाव में अपना वोट डाल सकता है। परिणाम की घोषणा के दिन वोटों की गिनती की जाती है और अधिक संख्या वाले वोटों को विजेता घोषित किया जाता है।

भारत में चुनाव को लोकतंत्र का त्यौहार माना जाता है क्योंकि यह वह दिन है जो जनता को अपने मतदान के अधिकार का प्रयोग करने की अपार शक्ति देता है जो किसी राष्ट्र की नियति को बदल सकता है। चुनाव भी एक ऐसा मंच है जिस पर एक मतदाता देश को मजबूत करने और राष्ट्र निर्माण की एक आशा की नई रोशनी देखता है।

(ख) महिला सशक्तिकरण

उत्तर– पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कहा गया मशहूर वाक्य "लोगों को जगाने के लिये", महिलाओं का जागृत होना जरुरी है। एक बार जब वो अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आगे बढ़ता है और राष्ट्र विकास की ओर उन्मुख होता है। भारत में, महिलाओं को सशक्त बनाने के लिये सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले उन सभी राक्षसी सोच को मारना जरुरी है जैसे दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वैश्यावृति, मानव तस्करी और ऐसे ही दूसरे विषय। लैंगिक भेदभाव राष्ट्र में सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक अंतर ले आता है जो देश को पीछे की ओर ढ़केलता है। भारत के संविधान में उल्लिखित समानता के अधिकार को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं को सशक्त बनाना सबसे प्रभावशाली उपाय है इस तरह की बुराईयों को मिटाने के लिये।

लैंगिक समानता को प्राथमिकता देने से पूरे भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिला है। महिला सशक्तिकरण के उच्च लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये इसे हर एक परिवार में बचपन से प्रचारित व प्रसारितकरना चाहिये। ये जरुरी है कि महिलाएँ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक रुप से मजबूत हो। चूंकि एक बेहतर शिक्षा की शुरुआत बचपन से घर पर हो सकती है, महिलाओं के उत्थान के लिये एक स्वस्थ परिवार की जरुरत है जो राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिये आवश्यक है। आज भी कई पिछड़े क्षेत्रों में माता-पिता की अशिक्षा,

असुरक्षा और गरीबी की वजह से कम उम्र में विवाह और बच्चे पैदा करने का चलन है। महिलाओं को मजबूत बनाने के लिये महिलाओं के खिलाफ होने वाले दुर्व्यवहार, लैंगिक भेदभाव, सामाजिक अलगाव तथा हिंसा आदि को रोकने के लिये सरकार कई सारे कदम उठा रही है।

महिलाओं की समस्याओं का उचित समाधान करने के लिये महिला आरक्षण बिल-108वाँ संविधान संशोधन का पास होना बहुत जरुरी है ये संसद में महिलाओं की 33% हिस्सेदारी को सुनिश्चित करता है। दूसरे क्षेत्रों में भी महिलाओं को सक्रिय रुप से भागीदार बनाने के लिये कुछ प्रतिशत सीटों को आरक्षित किया गया है। सरकार को महिलाओं के वास्तविक विकास के लिये पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना होगा और वहाँ की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं और उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिये लड़िकयों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरुरत है।

(ग) सरदार वल्लभ भाई पटेल

उत्तर– एक प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता सेनानी सरदार वल्लभ भाई पटेल जी ने विभिन्न स्वतंत्रता आंदोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया। वे जानते थे कि स्वतंत्रता केवल तभी हासिल की जा सकती है जब हम अंग्रेजों के खिलाफ एकजुट हो जाएं। इस प्रकार वह देश के आम लोगों को प्रेरित करने के लिए आगे आए। उनके प्रयास फलदायी साबित हुए क्योंकि बड़ी संख्या में लोग स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के लिए आगे आये।

1942 में महात्मा गांधी ने आंदोलन का नेतृत्व किया था। ऐसा कहा जाता है कि शुरुआत में सरदार पटेल जी इस आंदोलन को लॉन्च करना चाहते थे। हालांकि गांधी जी ने आखिरकार भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया था, फिर भी पटेल जी ने अन्य कांग्रेस अधिकारियों की तुलना में आंदोलन में अधिकतम समर्थन दिया। उन्होंने गांधी जी और अन्य स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर काम किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को बहुत प्रभावित किया और उन्हें देश से बाहर निकलने के लिए मजबूर कर दिया।

देशभक्ति की भावना और भारत से बाहर निकलने का आग्रह भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जनता के बीच बहुत अच्छी तरह से देखा गया था। सकता है। पटेल जी ने इस आंदोलन के लिए लोगों को एक साथ लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस आंदोलन के दौरान, पटेल जी को विभिन्न कांग्रेस कार्यकारिणी नेताओं के साथ {भी} जेल भेजा गया था। उन्हें 1942 से 1945 तक अहमदनगर किले में रखा गया था।

सरदार वल्लभ भाई पटेल अपने जीवन के माध्यम से ताकत के प्रतीक थे। हालांकि, वर्ष 1950 में उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। वह और कमजोर हो गये और ज्यादातर अपने स्थान तक ही सीमित हो गये। नवंबर 1950 में वे बिस्तर पर सवार हो गये तथा 15 दिसंबर, 1950 को हार्ट अटैक से उनकी मौत हो गयी। पूरे देश द्वारा इस महान आत्मा के अब साथ न होने का शोक व्यक्त किया गया था।

स्वतंत्रता संग्राम और देश के निर्माण में सरदार वल्लभ भाई पटेल का योगदान त्रुटिहीन रहा है। उन्हें मृत्यु के बाद भारत रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

11. अपने मुहल्ले में पीने की पानी की समस्या के निवारण हेतु संबंधित अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर– सेवा में,

माननीय जल अधिकारी

महोदय,लालचौक, अंधेरी वेस्ट

मुंबई 456780

दिनांक–01-03-2018

विषय-- जल की समस्या के समाधान हेतु।

महोदय,

मैं अंधेरी ईस्ट में रहने वाला हूं और मेरा नाम सुरेश पाटिल है। महोदय मैं एक कामकाजी आदमी हूं और अकेले ही यहां एक भारे के घर में रहता हूं । मगर मुझे हर सुबह पानी लेने जाना होता है। मगर पानी का फोर्स ऐसा होता है। ३, घंटे तक लाइन पर खड़े होने के बाद मैं पानी भर पाता हूं और कभी -कभी बहुत देर से आफिस जाता हूं।

मेरे अलावा भी पानी लेने कुछ घरेलू महिला आती है जिनके बच्चे स्कूल जाते हैं और पानी के बिना न नहाना संभव है और न ही खाना बनाना। यदि पानी की गति थोड़ी तेज होती तो अच्छा हो जाता। हम सबको पानी जल्दी मिलता और कुछ हद तक शांति भी। पानी की समस्या को सुलझाने के लिए आप एक नया पंप लगवा सकते हैं। जिससे जल की गति अवश्य बढ़ेगी।

आशा करता हूं कि आप अपना ध्यान हमारे इलाके की ओर अवश्य केंद्रित करेंगे। हमें इस समस्या से अवश्य मुक्त करेंगे।

धन्यवाद।

सुरेश पाटिल

स्थानीय वासी।

12. 'अधजल गगरी छलकत जाए' का भाव-पल्लवन कीजिए।

उत्तर–

कुछ ज्ञानी विद्वानों ने बहुत अच्छी बातें कहीं है- **"अधजल गगरी छलकत जाय,भरी गगरिया चुपके जाए"** मतलब घड़ा आधा भरा हुआ हो,तो आवाज करता है, साथ में छलक कर गिर भी जाता है और पूरा भरा हो,तो बिल्कुल आवाज नहीं करता है और न ही छलकता है। पूर्ण रूप से भरा हुआ घड़े के पानी,पानी को पकड़े रहती है,उसी गिरने नहीं देती।

गुणवान व्यक्ति सरल और गम्भीर रहते हैं। वे बोलने के बाद नहीं सोचते हैं बल्कि बोलने से पहले सोचते है। वे शांती से निर्णय लेते हैं।
पहाड़ों से,चट्टानों से गुजरती हुई नदी खूब आवाज करती है, क्योंकि वह छिछली होती है, गहराई नहीं होती है,कंकड़-पत्थरों से टकराते हुए, रास्ता बनाती हुई चलती है। वह नदी जब मैदान क्षेत्र में होती है तो दूर-दूर तक समतल भूमि होती है,तो नदी में हलचल नहीं होती, उसकी गति मंद हो जाती है। आवाज नहीं होती, लहरों का पता नहीं चलता। शोरगुल हमेशा उथलेपन का सबूत है।

यह बात मनुष्यों पर भी लागू होता है। ज्ञानी व्यक्ति हमेशा शांत स्वभाव के होते है, वे बड़बड़ाते नहीं रहते है अर्थात् वे व्यर्थ नहीं बोलते, तोल-मोल कर बोलते है। उससे बार-बार कुरेद कर पूछने पर भी उतना ही बोलेगा जितने की आवश्यकता है। ये गहन विद्या और एकाग्रता, साधना से प्राप्त होता है। दिखने में वह उदास दिखाई देगा क्योंकि उसमें व्यर्थ चंचलता नहीं होती। नदी में जैसी गहराई होती है। अंदर से गहरापन होता है, बाहर छिछलापन नहीं होता। उसे यह बताने की जरूरत नहीं होती है कि वह कितना विद्वान, कितना गुणी है, कितना भला, कितना परोपकारी है। उसके वाणी से स्पष्ट झलकता है। ऐसे व्यक्ति को किसी प्रणाम-पत्र की जरूरत नहीं होती है, किसी प्रचार की जरूरत नहीं होती है। जो लोग अंदर से खोखले होते हैं, वे अपने मुंह मिया मिठू बनते है। उनके लिए यह जरूरी भी है, जिनका प्रचार दुसरे नहीं करते, उन्हें स्वयं का प्रचार खुद करना पड़ता है। ऐसे लोग ज्यादा छिलकते रहते है, अपना गीत स्वयं गाते रहते हैं। अब नेता लोग को ही लेलो, हमेशा बढ़ा-चढ़ा कर बोलना उनकी आदत है,

थोड़ा सा कंबल बाँट दिया उसका गीत महीनों सालों तक चर्चा करते रहते है। समाज में कुछ ऐसे समाजसेवी भी है, जो भविष्य में नेता बनने के लिए नये-नये भाषण,वादा कर डालते है और कहते है कि आपका हक मै दिलवाकर रहूँगा, मेरे बहुत ऊपर तक पहचान है और जब वादा, विश्वास टुट जाता है तब कहते है कि चुनाव आ गया, विपक्षा होने नहीं दे रहा है और फिर बोलते है कि हमें सत्ता में आने दिजिये फिर आपको काम मै चुटकियों में कर दूंगा और एक बार जीत गये तो हम आपके है कौन ? अर्थात् बढ़ा-चढ़ा कर बोलते रहना ही अल्पज्ञान का पहचान है। ऐसे लोग अपना तो क्षय करते ही हैं साथ में उससे उम्मीद लगाये दुसरा आदमी को भी मुँह की खानी पड़ जाती है अर्थात् बिना मतलब का कठिनाइयों का सामना करना पर जाता हैं। इसलिए उतना ही ज्ञान बाँटे जितना आपमें हैं और ये आपके लिए भी अच्छा है और दूसरे के लिए भी है।

13. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके आधार पर नीचे दिये गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

संयुक्त परिवार का संबंध जिस समाज व्यवस्था से था, उसमें सामाजिक विकास मुख्यतया कृषि पर आधारित था और कृषि उत्पादन का ढाँचा सामंती था। आज जिन आधुनिक मशीनों को हर कहीं देखते हैं, वे उस समय तक अस्तित्व में नहीं आई थीं। खेती के भी आधुनिक उपकरण नहीं थे। लोग हाथ से बने औजारों का इस्तेमाल करके अपने लिए जरूरी चीजों का निर्माण करते थे। किसान का पूरा परिवार एक ही जमीन पर खेती करता था और उससे होने वाली आय पर सभी का सम्मिलित अधिकार होता था। लोग नौकरी-पेशे में बहुत कम थे, ज्यादातर लोग पारिवारिक काम-धंधों में लगे हुए थे जो उन्हें परिवार की परंपरा से प्राप्त होता था। उदाहरण के लिए, लुहार लोहे का औजार बनाता था। उसे यह काम अपने दादा और पिता से विरासत में मिला होता था और यही व्यवसाय वह अपने बच्चों के लिए छोड़ जाता था। पूरा परिवार पुश्तैनी धंधे में लगता था, चाहे वे जमींदार हों, चाहे किसान; चाहे वे पुरोहित का काम करते हों, चाहे व्यापार करते हों। इसलिए लोगों को नौकरी या व्यवसाय के लिए दूर नहीं जाना पड़ता था, न ही एक परिवार के विभिन्न सदस्यों की आय अलग-अलग होती थी। उनका सामूहिम श्रम ही सामूहिक संपत्ति को पैदा करता था इसलिए उस पर उन सबका अधिकार होता था।

संयुक्त परिवार की एक विशिष्टता यह भी थी कि वह पितृसत्तात्मक समाज की देन था। परिवार की सामूहिक संपत्ति पर पुत्रियों का कोई अधिकार नहीं माना जाता था, उनका अधिकार उनकी ससुराल में माना जाता था। सम्पन्न एवं उच्च वर्ग के संयुक्त परिवारों में घर से बाहर के कार्यों में स्त्रियों की किसी तरह की भागीदारी नहीं होता थी। उन्हें जीवन-निर्वाह के लिए पूरी तरह पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता था। लेकिन निम्न वर्ग एवं गरीब तबके की स्त्रियाँ घर के बाहर भी काम करती थीं, देहाती क्षेत्रों में यह स्थिति अब भी प्रायः बनी हुई है।

क) संयुक्त परिवार मुख्यतया किस समाज व्यवस्था से संबंधित था?

ख) संयुक्त परिवार-व्यवस्था में परिवार के लोग किस धंधे में लगे रहे थे?

ग) संयुक्त परिवार-व्यवस्था में कृषि-आय पर किसका अधिकार होता था?

घ) इस व्यवस्था में संपन्न तथा उच्च वर्ग की स्त्रियों का जीवन निर्वाह कैसे होता था?

ङ) सामंती ढाँचे वाले समाज में औचार किस प्रकार थे?

उत्तर- **(क)** संयुक्त परिवार का संबंध जिस समाज व्यवस्था से था, उसमें सामाजिक विकास मुख्यतया कृषि पर आधारित था और कृषि उत्पादन का ढाँचा सामंती था।

(ख) लोग नौकरी-पेशे में बहुत कम थे, ज्यादातर लोग पारिवारिक काम-धंधों में लगे हुए थे जो उन्हें परिवार की परंपरा से प्राप्त होता था। उदाहरण के लिए, लुहार लोहे का औजार बनाता था। उसे यह काम अपने दादा और पिता से विरासत में मिला होता था और यही व्यवसाय वह अपने बच्चों के लिए छोड़ जाता था।

(ग) किसान का पूरा परिवार एक ही जमीन पर खेती करता था और उससे होने वाली आय पर सभी का सम्मिलित अधिकार होता था।

(घ) सम्पन्न एवं उच्च वर्ग के संयुक्त परिवारों में घर से बाहर के कार्यों में स्त्रियों की किसी तरह की भागीदारी नहीं होती थी। उन्हें जीवन-निर्वाह के लिए पूरी तरह पुरुषों पर निर्भर रहना पड़ता था।

(ङ) आज जिन आधुनिक मशीनों को हर कहीं देखते हैं, वे उस समय तक अस्तित्व में नहीं आई थीं। खेती के भी आधुनिक उपकरण नहीं थे। लोग हाथ से बने औजारों का इस्तेमाल करके अपने लिए जरूरी चीजों का निर्माण करते थे।